Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 SHISRRJ | Volume 4 | Issue 1 | ISSN : 2581- 6306

वैश्विक पटल पर गोंड कला की सम्भावनाएँ

गोरे लाल
शोध छात्र,
महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय,
चित्रकूट, सतना, मध्यप्रदेश।

Article Info
Volume 4, Issue 1
Page Number : 231-235

Publication Issue :
January-February-2021

Article History
Accepted : 16 Jan 2021
Published : 30 Jan 2021

सारांश – "चित्रकला की मौलिकता और अस्तित्व को बचाने के लिए हस्तशिल्प विकास निगम, ललित कला अकादमी जैसी संस्थाएँ जनजातीय चित्रकला की उत्कृष्टता को प्रोत्साहन देकर और उनके द्वारा निर्मित सामग्रियों की प्रदर्शनी लगाकर इस दिशा में अहम पहल कर सकती हैं जिससे कलाकारों को लोकप्रियता तथा अधिकतम आर्थिक लाभ मिल सके"। वेंकट रमन सिंह श्याम का कहना है कि शैक्षिक धरातल पर जिस प्रकार से बी.एफ.ए. और एम.एफ.ए. के कोर्स संस्थाओं में चल रहे हैं उसी प्रकार से गोंडकला के लिए भी संस्थाएँ होनी चाहिए। मध्यप्रदेश सरकार को इस विषय पर कोई ठोस निर्णय लेकर चित्रकारों एवं कला संस्थानों को प्रोत्साहित करना चाहिए ताकि वैश्विक पटल पर गोंडकला की सम्भावनाएं और तेजी से आगे बढ़ सकें।

मुख्य शब्द – वैश्विक पटल, गोंड, कला, चित्रकार, जनजातीय, लोकप्रियता।

कला के परिदृश्य में इन दिनों अनेकानेक सरगर्मियां हैं और भारतीय तथा विश्व कला में आए दिन प्रदर्शनियां, आयोजनों तथा विमर्शों के माध्यम से कला की भूमिका को अपने–अपने ढंग से समझने की कवायद(चेष्टाएं) चल रही हैं। उसी कड़ी में मध्यप्रदेश की समकालीन कला प्रवृत्तियों के लिए हमें यहाँ के कला परिवेश और अतीत से होकर गुजरना होगा। मध्यप्रदेश प्रागैतिहासिक काल से लेकर समकालीन गोंडीय विचारधारा तक को अपने में समाए हुए एक विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान बनाए हुए है। भोपाल एक तरह से मध्यप्रदेश की कला का केंद्र बन गया है। यहाँ कला परिषद द्वारा कला प्रदर्शनियां, डिमास्ट्रेशन कला पर व्याख्यान करते रहने से यहाँ के गोंडकलाकारों को वैचारिक और सार्वभौमिक कला दृष्टि प्राप्त हुई है। पिछले कुछ सालों से स्थितियों में तेजी से उभरते कलाकारों में वैश्विक पटल पर मध्यप्रदेश के गोंड़

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

चित्रकारों ने खासकर युवा पीढ़ी आम आदमी के साथ सीधे संवाद और सीधे सम्प्रेषण में अधिक रुचि रखने लगे हैं। सोशल मीडिया ने गोंड कलाकारों को आम आदमी तक पहुँचाने में अच्छी खासी भूमिका निभाई है। जिसने इस कला को विश्व स्तर की कला के समान ला दिया है। भारतीय समकालीन कलाकारों ने भी आदिम कला को अपनाया है। विभिन्न कलाकारों में जो पारस्परिक अन्तःक्रिया होती रही है उसका परिदृश्य भी सभी देशों व कलाओं में देखा जा सकता है। जीवन के संवेगों, अनुभूतियों, तकनीकी ज्ञान व सृजनात्मक प्रयोगों द्वारा कलाकार नित नयी कलाकृतियों का निर्माण करता है। जनगढ़ श्याम ने थोड़े समय में ही आदिवासी जनजीवन व गोंड परम्परा के फलक को आधार बनाकर चित्रण प्रारम्भ किया जिससे मध्यप्रदेश की गोंड चित्रकला ने नवीन आयाम प्रस्तुत किए। जनगढ़ सिंह श्याम ने गोंड चित्रकला को एक नया रास्ता दिखाया। आज बहुत से चित्रकारों ने गोंड समाज के विभिन्न पक्षों को उजागर कर चित्रकला को सामाजिक संदर्भों से जोड़ दिया। "मिट्टी, प्राकृतिक रंगों और सहज कल्पनाओं तथा अवधारणाओं से आदिवासी गाँव की दीवारों पर जो चित्र कृतियां नजर आती हैं उनमें एक तरफ बच्चों जैसी मासूमियत है तो दूसरी ओर बूढ़ों का अनुभव संसार भी किसी न किसी रूप में परिलक्षित होता है।"[1] लेकिन आज कलाकार की भावनाएँ तो वही है परंतु अब वे कैनवॉस पर एक्रेलिक, ऑयल, जलरंग व अन्य विभिन्न प्रकार के चटकीले चमकदार रंगों का प्रयोग कर रहै हैं। आज वैश्विक पटल पर गोंडकला देश काल की सामाजिकता का दर्शन एवं एहसास कराने के साथ–साथ उस युग की संवेदना तथा सम्प्रेषण से हमें जोड़ देती है। एक समृद्ध गोंडकला अपने क्षेत्र तथा उसके मिजाज में बसते विचारों को उकेरती है।

एक साक्षात्कार में वेंकटरमन सिंह श्याम ने बताया कि मैने दिल्ली में ग्लोबल वार्मिंग पर पेंटिंग की प्रदर्शनी लगायी। ग्लोबल वार्मिंग आज विश्व की सबसे बड़ी समस्याओं में से एक है जिससे पृथ्वी के औसत तापमान में वृद्धि हो रही है इसका कारण मानव द्वारा पर्यावरण को ध्यान में रखें बिना विकास की होड़ में लगे रहना है। आज मनुष्य जंगलों और पेड़ों को नष्ट करता जा रहा है जिससे ग्रीन हाउस गैसें बढ़ रही हैं जो ग्लोबल वार्मिंग का कारण है। इन गैसों का संतुलन वृक्षारोपण के माध्यम से किया जा सकता है। गोडों द्वारा बनाए गए चित्र जंगल, पेड़ों और हरियाली से भरे हुए होते हैं जो वैश्विक समुदाय को संदेश देने का प्रयास कर रहे हैं कि वैश्विक तापन (ग्लोबल वार्मिंग) जैसी समस्या को दूर करने के लिए पर्यावरण को हरा–भरा बनाने की आवश्यकता है।

गोंडकला आज विश्व मंच तक आधुनिक गोंड परधान कलाकारों की वजह से पहुंची है। आज से लगभग चार दशक पहले स्वामीनाथन ने गोंडकला के संदर्भ में कहा था कि आदिवासी कला समकालीन कला है जो आज सत्य दिखाई देता है। आज गोंडकला में विश्व को सीख देने की क्षमता है और यह सीख विश्व कल्याण करने मं सहायक भी है। गोंडकलाकार कहते हैं कि यदि थोड़े से लोग भी प्रकृति के विनाश

की इस होड़ को अपने भीतर महसूस कर सकें तो हमारे द्वारा किए गए प्रयास सफल हैं। ये कलाकार अपने चित्रण के माध्यम से समदर्शी प्रकृति का महत्व दिखाना चाहते हैं। जहाँ किसी से भेदभाव नहीं है। उसके लिए मनुष्य ही नहीं सृष्टि के सभी जीव बराबर हैं फिर ना जाने लोग इसे नष्ट करने में क्यों आमदा हैं। इन कलाकारों ने अपने चित्रों में गहरे चटक रंगों का प्रयोग किया है जो उसके जीवन की गहराई को भी दर्शाता है। ये हरा, लाल, बैंगनी, नीला, पीला या गहरे भूरे रंग के माध्यम से अपने चित्रों को जीवंत बनाने का प्रयत्न करते रहे हैं। आदिवासी कला एक जुनून, समर्पण, धरोहर के प्रति सजगता, पीढ़ियों से चली आ रही परम्पराओं के प्रति कर्तव्य बोध और जमीनी वजूद से जुड़े रहने की परिभाषा है।

नर्मदा प्रसाद टेकाम से बात करने पर उन्होंने बताया कि जगदीश स्वामीनाथन ने आदिवासियों की कला के महत्त्व को पहचाना और कलाओं के समक्ष समग्र अध्ययन हेतु इन कलाकृतियों को सहेजा। इन रचना कर्मियों को एकत्र कर भोपाल लाया गया और उनकी कलाकृतियों को नागर कलाकारों की कलाकृतियों के साथ एक ही छत के नीचे प्रदर्शित किया गया। इस प्रकार से स्वामी जी के प्रयासों से आदिवासी कला की पुनः प्रतिष्ठा हुई। आज भारत भवन में राष्ट्रीय स्तर पर नव कला अभिदान एवं अभिषेक हेतु हर दो साल में भारतीय विनाले का आयोजन किया जाने लगा। जिसमे भारत के सारे कलाकारों की गतिविधियों का केंद्र भारत भवन हो गया। जनजातीय कलाकारों को एक मंच पर आने का सुअवसर मिल गया। वर्तमान समय में मध्यप्रदेश के जिन युवा गोंडकलाकारों का काम रेखांकित किया गया है वे वेंकट रमन सिंह श्याम, राम सिंह उर्वेती, जापानी, दुर्गाबाई व्याम, आनन्द सिंह श्याम, सुभाष व्याम आदि गोंड परम्परा से अपनी भाषा गढ़ते हुए मध्यप्रदेश की गोंडकला ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान दर्ज की है।

जनजातीय चित्रकला सिर्फ अमूल्य धरोहर ही नहीं कही जा सकती वरन् समृद्ध परम्परा सभ्यता एवं जीवन्त संस्कृति के इतिवृत्त है। ये कलायें वस्तुतः किसी भी समाज के जनमानस का आईना होती हैं जिसकी आज वैश्विक पटल पर एक पहचान है। राम सिंह उर्वेती ने एक खास मुलाकात में बताया कि गोंड जनजातीय चित्रकला में पक्षियों, पेड़–पौधों, दन्त कथाओं तथा मनुष्य जीवन के विविध पक्षों का जो चित्रण हुआ है, और हो रहा है वह मनुष्य और प्रकृति के रिश्ते के बारे में आंतरिक अनुभूति पैदा करता है और एक विशेष लगाव को दिखाता है। उन्होंने बताया कि आज कला के विकास हेतु अच्छे शिक्षण संस्थान हैं। अच्छे संग्रहालय है कला वीथिताएँ हैं, अनेक संस्थाएँ हैं जो हम जैसे कलाकारों को वैश्विक पटल पर लाकर खड़ा कर दिया है। वर्तमान में विज्ञान का युग चल रहा है विज्ञान ने अनेक माध्यम तथा सुविधायें उपलब्ध कराई हैं जो पहले कभी नहीं थीं। आज विश्व मंच पर कला के आदान–प्रदान की सुविधायें बढ़ी हैं। जनजातीय चित्रकला सबसे सुखद स्थिति कला के प्रति जनसाधारण की रुचि का विस्तार भी की है जो वैश्विक पटल पर जनजातीय चित्रकला का भविष्य सँवारेगा। आज गोंड जनजातीय चित्रकला ने सभी क्षेत्रों को प्रभावित

किया है। चाहे वह वस्त्र हो या उद्योग, स्थापत्य हो या इंटीरियर या दैनिक उपयोग में आने वाली वस्तुयें, बसों में रेल के डिब्बों में, फाइव स्टार होटलों में आदि प्रमुख स्थानों में जनजातीय चित्रकला ने इन्हें समृद्ध किया है। जनजातीय चित्रकला पूर्णता लिये हुए है। गोंडकला ने अपनी सीमाओं को सदा खुला रखा है। यह खुलापन स्वच्छन्द परम्परा ही उसमें अंकुरित होने की ऊर्जा को बनाए हुए है। यह ऊर्जा ही उसे वैश्विक पटल पर वट वृक्ष के रूप में विकसित कर रही है आज जिसकी शाखायें फिर माटी से जुड़कर जड़ों के रूप में नई शक्ति से अंकुरित और पल्लवित होती है तथा यह क्रम हमेशा बना रहता है क्योंकि जनजातीय चित्रकला की जडें जमीन से ही अंकुरित हुई हैं और यही कारण है कि जनजातीय चित्रकला के उज्जवल भविष्य का परिचायक है। "वर्तमान में यदि आधुनिक कला रूपों और जनजातीय कला परंपरा दोनो को समग्र रूप से देखा जाए तो यह कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगा कि कला के प्रति अभिजात्य दृष्टिकोण में जनजातीय कला प्रतीकों मिथकों एवं लोक परम्पराओं को आधुनिक कला की धारा में ला खड़ा किया है।"[2] मध्यप्रदेश के समकालीन कला का प्रयत्न यही रहता है कि वह गोंडकला के विमर्श को प्रस्तुत करने के साथ–साथ परिदृश्य में आए कलाकारों को भी सामने लाए तथा एक सार्थक कला संवाद का वातावरण भी बनायें क्योंकि अब जनजातीय कला में भी बदलाव सूत्र देखे जा रहे हैं। खासतौर पर उनके माध्यमों और विषय के रूप में वातावरण, स्थान परिवर्तन के कारण बदलाव भी देखे जा रहे हैं। लेकिन इसके बावजूद मध्यप्रदेश के समकालीन कलाकारों से बात करने पर यह स्पष्ट हो गया कि यहाँ के कलाकार अपनी अमूल्य धरोहर को समृद्ध किए हैं। अपनी परम्परा एवं सभ्यता की जीवंत संस्कृति चित्रों के माध्यम से प्रस्तुत की है। आज वैश्विक पटल पर लम्बे समय से गोंड कलाकार जगह–जगह कला शिविर आयोजित करने के लिए निजी और राजकीय संस्थानों में जा रहे हैं जिनमें देश के चुनिंदा और कई पीढ़ियों, शैलियों में काम करने वाले कलाकार एक साथ एक मंच पर जमा होते हैं। कला में जब आपसी वैचारिक आदान–प्रदान करते हैं और कई स्तरों पर एक दूसरे से कुछ ले जाते हैं, अपना दे जाते हैं तो इस प्रकार हमारी कला समृद्ध होती है और दिनोंदिन माँग भी बढ़ती है।

वर्तमान समय में देखें तो गोंड जनजातीय कला परम्परा में परिवर्तन कर आज वैश्विक स्तर की आधुनिक धारा में अपने आप को पाती हैं यही कारण है कि आज गोंडकलाकार अपने विषय में बदलाव कर लिए हैं। एक साक्षात्कार में वेंकट रमन सिंह ने बताया कि गोंड परधान कला आधुनिक होने की वजह से आज वैश्विक पटल पर पहचान पा सकी है। अब गोंडकला परम्परागत नहीं रह गई है उसका रूप बदल गया है। शादी विवाह में भी बदलाव आ गया है इसी कारण हमारी कला पर भी इसका प्रभाव पड़ा है लेकिन हमारी पेंटिंग में गोंड परधान कला की झलक भी दिखती है।

एक श्रेष्ठ कलाकार की श्रेष्ठता केवल उसी तक सीमित नहीं होती है। वह अपनी कलाकृतियों से दर्शकों के लिए स्पेस प्रदान कराता है ताकि कलाकृति के रसास्वादन का गुण विकसित हो यह तभी सम्भव है जब वैचारिक आदान–प्रदान होते रहें जिसके लिए वैश्वीकरण एक विशेष माध्यम प्रदान करता है। वैश्वीकरण के कारण आज एक देश नहीं अपितु विश्व ही इस प्रकार जुड़ गया है मानो वह छोटा सा क्षेत्र हो जहाँ पहुँचना बिल्कुल आसान हो गया है। वैश्वीकरण की वजह से विश्व के अनेक देशों तक पहुँच सम्भव हुई है। आज वेंकट रमन सिंह श्याम, भज्जू श्याम, दुर्गाबाई व्याम आदि ऐसे आदिवासी कलाकार हैं जिनकी कृतियां विश्व के अनेक देशों में पसन्द की जा रही हैं। इस कारण इन कलाकारों की पहचान जहाँ वैश्विक स्तर पर हो गई है वहीं आर्थिक रूप से इन्हें समृद्ध बनाया है, विज्ञान ने उन्हें अनेक माध्यम तथा सुविधाएँ उपलब्ध कराई हैं जिससे गोंड परधान चित्रकला का जनसाधारण पर प्रभाव और विदेशियों को आकर्षित करने की सामर्थ्य भी जुटाई है। "चित्रकला की मौलिकता और अस्तित्व को बचाने के लिए हस्तशिल्प विकास निगम, ललित कला अकादमी जैसी संस्थाएँ जनजातीय चित्रकला की उत्कृष्टता को प्रोत्साहन देकर और उनके द्वारा निर्मित सामग्रियों की प्रदर्शनी लगाकर इस दिशा में अहम पहल कर सकती हैं जिससे कलाकारों को लोकप्रियता तथा अधिकतम आर्थिक लाभ मिल सके"।[3] वेंकट रमन सिंह श्याम का कहना है कि शैक्षिक धरातल पर जिस प्रकार से बी.एफ.ए. और एम.एफ.ए. के कोर्स संस्थाओं में चल रहे हैं उसी प्रकार से गोंडकला के लिए भी संस्थाएँ होनी चाहिए। मध्यप्रदेश सरकार को इस विषय पर कोई ठोस निर्णय लेकर चित्रकारों एवं कला संस्थानों को प्रोत्साहित करना चाहिए ताकि वैश्विक पटल पर गोंडकला की सम्भावनाएं और तेजी से आगे बढ़ सकें।

सन्दर्भ

01. समकालीन कला : अंक 18 नव. 2000 पृष्ठ– 26।

02. समकालीन कला : अंक 42–43 जुलाई–अक्टूबर 2010 नवंबर 2010 फरवरी 2011 पृष्ठ–62।

03. समकालीन कला : अंक 42–43 जुलाई–अक्टूबर 2010 नवंबर 2010 फरवरी 2011 पृष्ठ–63।